# इतिहास में शेरशाह का स्थान

शेरशाह मध्यकालीन भारत का एक महान शासक था। डॉ. ए० एल० श्रीवास्तव के अनुसार "शासन-प्रबंध-पटुता, चारित्रिक दृढ़ता और सम्पन्न किये कार्यों की दृष्टि से शेरशाह मध्यकालीन भारत के शासकों में एक विशेष स्थान रखता है।" मजूमदार, रायचौधरी एवं दत्त के अनुसार, "शेरशाह का वास्तव में मध्यकालीन भारत के इतिहास में एक विलक्षण व्यक्तित्व है। केवल गुण और योग्यता के कारण वह एक अत्यन्त साधारण स्थिति से उन्नति कर अफगान पुनर्जागरण का नेता एवं भारत में उत्पन्न सबसे बड़े शासकों में एक बन गया। उसका राजनीतिक चरित्र सामान्य रूप से न्यायपूर्ण एवं मानवतापूर्ण था। उसने अपना अथक परिश्रम राज्य की सेवा में लगाया। उसके सुधार जनता के लिए कल्याणकारी थे।"

शेरशाह ने मात्र पाँच वर्षों के शासनकाल में इतिहास में वह स्थान प्राप्त कर लिया, जिसे प्राप्त करने में अलाउद्दीन तथा अकबर को लम्बा समय लगा था। राष्ट्र निर्माण की ओर ध्यान देनेवाला तथा दोनों सम्प्रदायों को साथ लेकर चलनेवाला वह पहला मुसलमान शासक था। अतः उसे प्रथम मुस्लिम राष्ट्र निर्माता भी कहा जाता है। डॉ० कानूनगो के अनुसार "शेरशाह ही अकबर से मुकाबला करने का साहस कर सकता है, क्योंकि वह प्रथम शासक था, जिसने इसरे

P.T.O

धर्मवालों को शान्त करके उनकी भावनाओं को बदला। शेरशाह को अकबर का अग्रगामी तथा पथ-प्रदर्शक भी कहा जाता है।

यदि शेरशाह की इतनी जल्दी मृत्यु नहीं होती तो मुगल वंश इतनी जल्दी पुनः स्थापित नहीं हो पाता। डॉ० वी० ए० स्मिथ के अनुसार - यदि शेरशाह कुछ समय और जीवित रहता, तो महान मुगल सम्राट इतिहास के रंगमंच पर नहीं आते।